

वशयेत् Spr. 4364. M. 6, 35. 36. अतो ऽभिलाषे प्रथमं तद्यविधे मनो बबन्ध  
RAGH. 3, 4. मनः समाधा so v. a. sich fassen R. 5, 43, 1. अन्वयत्र ° ÇAT. Br.  
14, 4, 8. 9. स्वस्ये तु भर्तृमनसि Verstand ÇAK. 191, v. 1. — b) das Er-  
denken, Ersinnen, Nachdenken: यो वां गर्तं मनसा तत्तदेतम् RV. 7, 64, 4.  
य इन्द्राय वचोयुक्ता तत्तुर्मनसा कुरी 1, 22, 2. 3, 60, 2. यत्र धीरा मनसा वा-  
चमक्रत 10, 71, 2. स्वेनैव धीरे मनसा यदग्रभीत् 1, 143, 2. 5, 42, 4. Viel-  
leicht auch objectiv das Ersonnene, Erfindung (= स्तोत्र SĀ.): श्येना  
इव ध्वंति अस्तारित्ते केन मृका मनसा रीरमाम RV. 1, 163, 2 (oder zu d;  
vgl. 6, 40, 4, wenn nicht etwa मृका नमसा zu setzen ist wie 6, 32, 17. 7,  
12, 1). दक्षिणं कस्य मनसा यत्तस्य । कडुं वेच इदं नमः 8, 73, 5. — c) Wunsch,  
Wille, Geneigtheit: रथो मनसा युक्तः RV. 7, 69, 2. 2, 40, 3. 6, 49, 5. आ स्मा  
कामं त्रितुरा मनः पृष्ठा 8, 24, 6. दानाय मनः सोमपावन्नस्तु ते 1, 33, 7. वि-  
द्या हि ते यथा मनो ऽस्मभ्यमिन्नं दित्ससि 170, 3. यमेच्छाम मनसा 10, 33,  
1. तदसदेव सम्मते ऽकुरुत स्यामिति beschloss TBa. 2, 2, 9, 1. मनसा यदि  
मन्यसे so v. a. wenn du Willens bist MBu. 3, 2171. मनोरमेति विख्याता  
सा हि तैर्मनसा कृता 9, 2210. मनसा विहिते (रथे) 3, 7130. (ऋद्म्, नदी-  
म्) मनसात्पेति vermöge des blossen Willens KAUSH. Up. 1, 4. मनश्चेक भ-  
रद्वाज्ञा भरतस्य so v. a. wurde ihm geneigt, fühlte sich zu ihm hingezo-  
gen R. GORR. 2, 99, 31. Am Ende eines adj. comp. nach einem nom. act.  
den Wunsch habend, beabsichtigend: स्वकन्याप्रदानं ° IRIH. bei SĀ. zu  
RV. 1, 123, 1. nach einem infin. mit abgeworfener Flexionsendung P.  
6, 1, 144. VArt. 3. Vop. 6, 72. ऋद्म् ° VIKR. 36. KĀM. NITIS. 13, 61. PAÑĀT.  
12, 19. 77, 2. — d) Lust, Verlangen, Streben, Trieb: सेमो अस्त्वरं मनसे  
युवन्वायम् RV. 1, 108, 2. ते पिता देवानां मनो कृतम् 187, 6. आ योक्ते श-  
श्वदुशता यथावेन्द्रं मृका मनसा सोमयेयम् 6, 40, 4. मनः पश्चादनु यच्छति र-  
श्मयः μένος ἔππων 73, 6. AV. 4, 26, 2. इन्द्रियेण वै मन्युना मनसा संग्रामे  
जयति Feuer TS. 2, 2, 8, 2. अजितमनस् KĀTU. 10, 10. राज्यं निजितवर्माणां  
कर्तुं तस्या मनो ऽभवत् RĀGA-TAR. 3, 251. न परिकल्पे वस्तुनि पौरवाणां  
मनः प्रवर्तते ÇAK. 23, 8. यदेया सर्वकल्पेषु मनो न प्रतिकल्पते R. 2, 32, 24.  
मनोक्त्य पयो पिबति bis das Verlangen gestillt ist P. 1, 4, 66, Sch.;  
vgl. Vop. 8, 21. — e) Gesinnung, Stimmung: अस्तसा मनसा तज्जुपित  
RV. 2, 10, 5. अदेव 23, 12. भद्रं मनः कृष्ण वृत्रतूयं 26, 2. 8, 19, 20. 43, 36.  
कृषिमेता मनसा यज्ञियेन 7, 67, 1. 7. पाक 104, 8. 1, 93, 8. 2, 32, 2. संस्पृष्टं  
मनो अस्तु वः TBa. 1, 2, 4, 17. देवासंश्चिन्मनसा सं हि जग्मुः wurden ein-  
müthig RV. 3, 1, 3. 1, 164, 8. VS. 12, 38. इदं तदस्य मनसा शिवेन सोमं  
भनयामि mit Vergunst desselben AIR. Br. 7, 33. मनो वै देवा मनुष्यस्या-  
ज्ञानति ÇAT. Br. 2, 1, 1. आकारैरिन्द्रितैर्गत्या u. s. w. गृह्यते ऽत्तर्गतं मनः  
Spr. 310. 2734. साधोः परुषितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम् 3234. फलेन  
मनसा वाचा दृष्ट्या चैनं प्रकुर्यते 712. चतुर्दशान्मनो दद्याद्वाचं दद्याच्च सू-  
नताम् MBu. 13, 349. — 2) in den philosophischen Systemen das Organ  
des Erkennens, Erkenntnisvermögen als die Thätigkeit Vorstellungen  
zu verbinden und zu sondern; es ist nicht Seele selbst, sondern deren  
Werkzeug und gilt, ausser dem Njāja, für vergänglich. NĪLAK. 11.  
महदाध्यमाद्यं कार्यं तन्मनः KAP. 1, 72. 2. 26. TATTVA. 8. KAN. 1, 1, 5. 8,  
1, 2. सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः TARKAS. 12. युगपज्ज्ञानानुत्प-  
त्तिर्मनसा लिङ्गम् Got. 1, 16. SĀMKEJAK. 27. मनो नाम संकल्पविकल्पा-  
त्मिकातःकरणवृत्तिः VEDĀNTAS. (Allah.) No. 47. Verz. d. Oxf. H. 223, a, 2  
v. u. SUÇ. 4, 310, 12. 311, 5. — 3) मनसो दोहः N. eines Sāman Ind.

V. Theil.

St. 3, 228, a. — 4) N. des 26ten Kalpa (s. कल्प 2, d.) Verz. d. Oxf. H.  
52, a, 3. — 5) der See Mānasa BULG. P. 4, 24, 20. — Vgl. अ°, अन्व°,  
अरमणास्, उन्मनस्, एक°, गूर्त°, डर्मनस्, निर्मनस्, नृ°, पुरु°, प्र°, प्रम-  
णास्, बृहन्मनस्, बोधिन्मनस्, भद्र°, मृका°, मृत°, वृष°, वि°, स°, सु°,  
कृत°.

मनस 1) m. oxyt. nach SĀ. N. pr. eines Rshi RV. 5, 44, 10. — 2) n. =  
मनस् am Ende eines comp.: वाचनसे Wort und Gedanke P. 5, 4, 77.  
अवाचनसगोचर VEDĀNTAS. (Allah.) No. 2. Am Ende eines adj. comp.:  
मन्मनसा PĀ. GRHJ. 1, 4, 11. मनसम् am Ende eines adv. comp. gaṇa  
शरदादि zu P. 5, 4, 107. Vop. 6, 62. प्रमत्तमनसः MBu. 3, 7222 (BENF. Chr.  
33, 6) ist gen. und प्रवासेत्तुमकमनसा VIKR. 61, 7 instr. von °मनस् (in  
BENF.'s Dict. als Nominative gefasst). — 3) f. आ N. pr. einer Göttin,  
einer Partikel der Prakṛti; sie ist eine Tochter Kaçjapa's, Schwe-  
ster Ananta's, Gattin Garatkāru's, Mutter Āstika's, und schützt  
die Menschen vor Schlangengift (vgl. विषहरी). Verz. d. Oxf. H. 23, a,  
32. 24, b, 40. fgg. PAÑĀT. 1, 10, 93. 11, 38. WILSON, Sol. Works I, 246.  
°विज्ञया Verz. d. Oxf. H. 27, a, 10.

मैनसस्यति (म°, gen. von मनस्, + प°) m. der Genius des geistigen  
Vermögens und Lebens des Menschen: Soma RV. 9, 11, 8. 28, 1. VS. 2.  
21. 8, 21. RV. 10, 164, 1. TBa. 3, 7, 4, 1. TAITT. Up. 1, 6, 2. ÇAT. Br. 1, 8,  
4, 14. ÅÇV. ÇR. 1, 7. KAUÇ. 117.

मनसागुता (म°, instr. von मनस्, + गु°) f. संज्ञायाम् P. 6, 3, 4, Sch.  
मनसाज्ञापिन् (मनसा + ज्ञा°) adj. mit dem Geiste wahrnehmend P. 6, 3, 3.  
मनसादत्ता (म° + द°) f. संज्ञायाम् P. 6, 3, 4, Sch.  
मनसादेवी f. = मनसा (s. u. मनस 3.) TRIK. 2, 8, 21.  
मनसापञ्चमी (म° + प°) f. der der Göttin Manasā geweihte fünfte  
Tag in der dunklen Hälfte des Monats Āshāḍha As. Ros. III, 287.

मनसाराग (म° + राग) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H.  
122, a. 14. 15.

मनसिकार (nom. act. von मनसि कार) m. Beherrschung Lois. zu AK.  
1, 1, 4, 11. BERNOUF in Lot. de la b. I. 413.

मनसिज्ञ (म°, loc. von मनस्, + 1. ङी) m. 1) Geschlechtsliebe, der Liebes-  
gott AK. 1, 1, 4, 21. HALĀJ. 1, 32. अकृतार्थे ऽपि मनसिज्ञे रतिमुभयप्रार्थना  
कुरुते ÇAK. 34. समस्तापः कामं मनसिज्ञनिदायप्रसर्योर्न तु योष्मस्यैव सु-  
भगमपराद्धं युवतिषु 37. 133. VIKR. 12. Spr. 2473. °तरु (vgl. कामतरु)  
RAGH. 18, 51. MĀLAV. 39. — 2) der Mond (vgl. Sp. 319, Z. 33. fgg.) WEBER,  
RĀMAT. Up. 286.

मनसिन् (von मनस्) adj. Sinn —, Geist habend (Gegens. अमनस् TS.  
7, 5, 12, 1.

मनसिषय (म° + शय) m. = मनसिज्ञ 1. H. 227, Sch. HALĀJ. 1, 33. Spr. 1403.  
मनस्का (von मनस्) 1) n. oxyt. demin.: अतो यत्ते कृदि अत्रितं मनस्को प-  
तयिष्यकम् । ततस्त इत्थी मुञ्चामि AV. 6, 18, 3. — 2) am Ende eines adj.  
comp.: तन्मनस्का seiner gedenkend MĀRK. P. 93, 8. गत° gedenkend, mit  
loc. RAGH. 9, 67; vgl. अ°.

मनस्कात (म° + कात्) adj. dem Herzen lieb, angenehm SUÇ. 1, 124, 1.  
सर्वभूतमनःकात् (vgl. die Scholien zu P. 8, 3, 46 am Ende) MBu. 7, 2245.

मनस्कार (von मनस् + 1. कर्) m. volles Bewusstsein, Vollgefühl AK.  
1, 1, 4, 11.